वैदिक उपासना पीठद्वारा प्रकाशित
सोमवार, ज्येष्ठ कृष्ण वात, तृतीया, कलियुग वर्ष ५१२५ (८ मई, २०२३)

जयतु जयतु हिन्दुराष्ट्रं
९ मई २०२३ का वैदिक पंचांग
कलियुग वर्ष – ५१२५ / विक्रम संवत – २०८० / शकवर्ष - १९४५......कलका पंचांगके सम्बन्धमें और जानकारी हेतु इस लिंकपर जाएं......https://vedicupasanapeeth.org/hn/kal-ka-panchang-09052023

अथ जगदम्बमदम्बकदम्ब वनप्रियवासिनि हासरते।
शिक्षरिशिरोमणि तुडङ्गहिमालय शुंगनिजालय मध्यगते॥
मधुमधुरे मधुकैटभगदजजदन रासरते।
जि जि हे महिषासुरमर्दिनि स्मयकपदिनि शैलसुते॥
अर्थः हे जगतमाता, मेरी मां, प्रेमसे कदम्बके वनमें वास
करनेवाली, हार्ष भावमें रहनेवाली, हिमालयके शिखरपर स्थित अपने भवनमें विराजित, मधुकी (शहदकी) भांति मधुर, मधु-कैटबका मद नष्ट करनेवाली, महिषको विदीर्ण करनेवाली, सदा युद्धमें लिस रहनेवाली, हे महिषासुरका मर्दन करनेवाली, अपने बालोंकी लतासे अकर्षित करनेवाली, पर्वतकी पुत्री ! तुम्हारी जय हो, जय हो, जय हो।

श्रीगुरु उवाच

बुद्धिजीवीकी अपेक्षा 'मुझे दिखाई नहीं देता', इसका खुले मनसे स्वीकार करनेवाला श्रेष्ठ

मोतियाबिन्दवाले व्यक्तिको छोटे अक्षर दिखाई नहीं देते। यदि उसे किसीने पढकर दिखाया, तो मोतियाबिन्दवाला व्यक्ति कभी ‘वहा अक्षर है, इसका आप भ्रम उत्पन्न कर रहे हैं’, ऐसा नहीं कहता। वह कहता है, “मुझे छोटे अक्षर दिखाई नहीं देते।” उपनेत्र लगानेपर उसे छोटे अक्षर पढने आते हैं।

इसके विपरीत बुद्धिजीवियोंको जो स्वीकार्य नहीं होता, उसे वह झूठ कहते हैं। साधनाके कारण सूक्ष्मदृष्टि प्राप्त होनेपर बहुत कुछ समझमें आता है, वह उनके लिए स्वीकार्य नहीं होता। - सचिवदानन्द परब्रह्मा डॉ. जयंत आठवले, संस्थापक, सनातन संस्था

साभार: मराठी दैनिक सनातन प्रभात (https://sanatanprabhat.org)
साधनाके साथ अंहकार, जितना प्रगल्भ होता है, मृत्यु उपरान्त उस जीवात्माको उतनी ही शक्तिशाली अनिष्ट योनि प्राप्त होती है। सीधा समीकरण समझ लें,
साधना + अहंकार = असुर । अतः साधकको अहंकारके लक्षणोंको दूर करने हेतु सुनने और सीखनेकी वृत्तिको आत्मसात्त करना चाहिए एवं सतर्कतासे स्वभाववदोष निर्मूलन एवं अहंनिर्मूलनकी प्रक्रियाको क्रियान्वित करने हेतु सातत्यसे प्रयास करना चाहिए ।

***************

२. जब भी आप किसी आश्रममें जाएं और आपको कोई सेवाकी सन्धि मिले तो इसप्रकार प्रार्थना करें “हे परम पूज्य गुरुदेव ! मुझे आपकी कृपा करें, मेरी सेवा चूक विरहित, भावपूर्ण, एकाग्रतापूर्वक और परिणामकारक (output oriented) हो ऐसी आप कृपा करें, सेवाके मध्य चूक होते समय ही हमें सेवा परिपूर्ण हो और आपके श्रीचरणोंतक पहुंचे ऐसी कृपा करें।”

***************

३. भक्तियोग कलियुगकी अधिक योग्य एवं प्रचलित साधना क्यों ? (भाग-४)

कलियुगमें अन्य योगमार्गके योग गुरु मिलना कठिन है और भक्तियोगके गुरु मिलना सरल है; अतः कलियुगमें भक्तियोगका योगमार्ग अधिक योग्य है। कलियुगमें अधिकांश सन्तोंने भक्तिमार्गका ही प्रसार किया है। कुछ सन्तोंने यदि ध्यानयोग, ज्ञानयोग या क्रियायोगका प्रसार करते भी हैं तो भी वे उसमें भक्तियोगको सम्मिलित अवश्य करते हैं; जिससे उनके अनुयायीको उनके द्वारा बताए गए योगमार्गकी व्यापकता बढ सके एवं उनके अनुयायीकी शीघ्र आध्यात्मिक प्रगति हो। जैसे एक बार मैं एक गुरुभें मिली, उनहोंने कहा, “हम देवी-देवताओंको मानकर भक्तिमार्गका अनुसरण नहीं करते।
हैं, हम ध्यान करते हैं। उनका अध्यात्मिक स्तर ४०% था।” मैं जानना चाहती थी कि ४०% अध्यात्मिक स्तरवाले साधकों का उसके गुरु ध्यानमार्गकी साधना कैसे करवाते हैं? अतः मैं उनसे पूछा कि आप ध्यानमें किसका ध्यान करते हैं तो उन्होंने कहा, “हम प्रातः छह बजेसे सात बजेतक ध्यान करते हैं; क्योंकि हमारे गुरु भी उसी समय ध्यान करते हैं; इसलिए हम उनके स्वरूप का ध्यान करते हैं या उनके चरणों का ध्यान करते हैं।” मैंने उनसे प्रेमसे कहा, “भैया, गुरुका ध्यान बिना गुरुसे प्रेमके हो सकता है क्या?” वे बोले ‘नहीं। मैंने कहा, “आपका मार्ग गुरुकृपायोग है और इसमें ध्यान और भक्ति, इन दोनों योगमार्गका आपके गुरुने संगम किया है। ध्यान दो प्रकारका होता एकमें बाह्य अविम्बनका आधार लिया जाता और दूसरेमें आन्तरिक अविम्बनका और यदि उस आन्तरिक अविम्बनमें अपने इष्ट या आराध्यका आधार हो तो वह भक्तियोग ही होता है।” वे निश्चित थे। थोड़े प्रमाणमें वे ध्यान मार्ग यह अहं भी उनका न्यून हुआ। मात्र ६०% से अधिक स्तरपर ध्यान बिना बाह्य अविम्बनके अधिक समय नहीं टिकता है; इसलिए उससे नीचेके अध्यात्मिक स्तरपर किसी न किस प्रकारका आधार लेना ही पड़ता है। मैंने उन सन्तको भी मन ही मन नमन किया, जिन्होंने ध्यानका आधार लेकर अपने शिष्यमें भक्तिमार्गका बीजारोपण कर रहे थे।

वस्तुतः जब बच्चा ‘भात-दाल’ नहीं खाना चाहता है तो मां उसके कौरको किसी और नामसे खिला देती है, सदृश भी ऐसे ही होते हैं, समाज कैसे साधना करे, इसपर उनका सतत शोध चलता है और वे उसे पुरातन मार्गको नूतन नाम देकर अपने शिष्यको साधना पथपर अग्रसर करते है इसलिए सदृश पूजनीय होते हैं।

- (पू.) तनुजा ठाकुर, सम्पादक
प्राच्यविद्यामें गर्भवान्धनका विज्ञान (भाग - १)

पौराणिक कथाओंमें प्राच्यविद्याओंसे सम्बंधित संकेत सूप्र छपे होते हैं। पुराणकथाओंको समझनेके लिए प्राच्यविद्याओंका ज्ञान होना आवश्यक है। अन्यथा अर्थका अनर्थ समझनेआता है।

महाभारतमें श्रीकृष्ट्र् द्वैपायन व्यासजीके जन्मकी कथा है कि ऋषि श्रेष्ठ पाराशरजी भ्रमण करते हुए गंगा के किनारे पहुँचे, उन्हें नदीके दूसरी ओर जाना था। उस समय घाटपर एक धीवर कन्या नाव लिए थी। उनके व्यासजी नावकर काम करने देनेका अनुरोध किया। कन्या ऋषि नावमें बिठाकर नदी पार करने लगी। तभी ऋषि, कन्याके योजना करके कामातुर हो उठे तथा कन्यासे प्रणय निवेदन करने लगे। कन्या पहले तो संकोचवश मना करती रही, अन्ततः समझानेपर मान गई। ऋषि ने तपबिसे कन्याकी गन्धको परिवर्तित कर दिया। मस्त्यगंधा सुगंधा हो गई तथा ऋषि ने गन्धवर विवाहकर उन कन्यासे समागम किया। कन्याको गर्भधारण करा दिया तथा वरदान दिया कि तेरे गर्भसे दिव्य ज्ञानसे सम्पन्न ऋषियोंमें श्रेष्ठ पुत्र जन्म लेगा।

इस कथामें कहीं गई बातें सहज ही लोकरितिके विरूद्ध लगतीं हैं। ऋषियोंमें श्रेष्ठ माने जानेवाले परम ऋषि पाराशर सामान्य जनकी भांति कामातुर हो गए। यह बात तर्क संगत भी नहीं लगती। निश्चित हर्ते इसके पीछे विशेष कारण रहे होंगे।

इस कथाको समझनेके लिए कामातुरतके कारण और गर्भधारनके सम्बन्धमें ज्योतिषके मुहूर्त, ग्रहस्थिति शुकन आदिके ज्ञानकी आवश्यकता है।
ज्योतिषमें जातककी जन्म कालिक ग्रह स्थितिके आधारपर जातकके स्वभाव आचरणको जाना जा सकता है। साथ ही जातक किस क्षेत्रमें किस स्तरतक सफल होगा वह भी जाना जा सकता है।

ज्योतिषमें महापुरुषोंकी जन्म कुण्डलीमें विशेष प्रकारकी ग्रह स्थितिका वर्णन है जैसे श्रेष्ठ लोगोंकी जन्म कुण्डलीमें तीन या तीनसे अधिक ग्रह अपनी उच्च राशिमें होते हैं। पंच महापुरुष योग, गजकेसरी योग (गुरु चन्द्रकी युति), लक्ष्मी योग (चन्द्र मंगलकी युति) आदि योग होते हैं।

महापुरुषोंके जन्मके लिए उपयुक्त ग्रह स्थिति कब बनेगी, यह ग्रह गणनासे जाना जा सकता है। अब तो संगणकका युग है नए-नए ज्योतिष 'एप्प' उपलब्ध हैं तो गणना और भी अधिक सहज हो गई है।

जब यह जान लिया जाए कि ग्रह स्थिति कब महापुरुषोंके जन्मके अनुकूल होगी तो उससे दस माह पूर्व शुभ मुहूर्तमें गर्भधारण संस्कारकर श्रेष्ठ आत्माको सन्तानके रूपमें प्राप्त किया जा सकता है।

भगवानपर विश्वास

एक धनी व्यक्ति था। उसने समुद्रमें अकेले भ्रमणके लिए एक नाव बनवाई। एक दिवस वह नाव लेकर समुद्रमें भ्रमणके लिए निकला।

आधे समुद्रके पहुँचा ही था कि अकसमात एक तीव्र झंझावत (तूफान) आया। उसकी नाव पूर्ण रूपसे नष्ट हो गई; परन्तु वह जीवन रक्षक यन्त्रकी सहायतासे समुद्रमें कूद गया। जब झंझावत शान्त हुआ, तब वह तौरता हुआ एक द्वीपपर
पहुंचा; परन्तु वहां भी कोई नहीं था। द्वीपके चारों ओर समुद्रके अंतरिक कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था।

उस व्यक्तिने सोचा कि जब मैंने पूरे जीवनमें किसीका कभी भी बुरा नहीं किया तो मेरे साथ ऐसा क्यों हुआ?

उस व्यक्तिको लगा कि भगवानने मृत्युसे बचाया है तो आगेका मार्ग भी भगवान ही बताएगे।

धीरे-धीरे वह वहांपर उगे झाड-पत्ते खाकर जीवन व्यतीत करने लगा।

अब धीरे-धीरे उसकी श्रद्धा टूटने लगी, भगवानपरसे उसका विश्वास उठ गया। उसको लगा कि इस जगतमें भगवान है ही नहीं।

तब उसने सोचा कि अब पूर्ण जीवन यही इसी द्वीपपर ही बिताए है तो क्यों न एक झोंपड़ी बना लूँ...?

उसने झाड़ी डालियों और पत्तोंसे एक छोटीसी झोंपड़ी बनाई। उसने मन-ही-मन कहा कि आजसे झोंपड़ीमें सोनेको मिलेगा, आजसे बाहर नहीं सोना पडेगा।

रात्रिहुई ही थी कि अचानक बिजलियां जोर-जोरसे कडकने लगीं। तभी अचानक एक बिजली उस झोंपड़ीपर आ गिरी और झोंपड़ी धड़कते हुए जलने लगी।

यह देखकर वह व्यक्ति टूट गया। आकाशकी ओर देखकर बोला, "तू भगवान नहीं, राक्षस है।

तुझको दया जैसा कुछ है ही नहीं, तू बहुत कूर है।"

वह व्यक्ति हताश होकर सिरपर हाथ रखकर रो ही रहा था कि तभी एक नाव द्वीपके पास आई। नावसे उत्तरकर दो व्यक्ति बाहर आए और बोले, "हम आपको बचाने आए हैं। दूरसे इस वीरान टापूमें जलती हुई अभि देखी तो लगा कि कोई उस टापूपर कष्टमें है। यदि तुम अभि नहीं जलाते तो हमें ज्ञात
नहीं होता कि इस द्वीपपर कोई है।
उसे व्यक्तिके नेत्रोंसे अश्रुधारा बह निकली। उसने ईश्वरसे क्षमायाचना की और बोला कि मुझे क्या पता कि आपने मुझे बचाने के लिए ही मेरी झोपडी जलाई थी।
दिन चाहे सुखके हों या दुःखके, ईश्वर अपने भक्तोंके साथ सदा रहते हैं।

घरका वेद्य

दही (भाग - १४)

* अलसरके लिए उपयोगी: पेटका अल्सर व कर्क रोगसे (केंसरसे) दही शरीरको बचाए रखता है।
* दही खानेसे अस्थियां दृढ होती हैं; क्योंकि इसमें 'कैल्शियम' अत्यधिक मात्रामें होता है।
* दहीसे शरीरको 'प्रोटीन' मिलता है; क्योंकि इसमें 'प्रोटीन' प्रचुर मात्रामें होता है।
* दही पाचनतन्त्रको शक्तिशाली करता है, खाना सरलतासे पच जाता है।
* दही खानेसे शरीरको ऊर्जा मिलती है और आन्तरिक बल बढ़ जाता है।
* दहीसे अम्लता (एसिडिटी) नहीं बनती, रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। दही खानेसे तनाव कम होता है।
* दही त्वचाके लिए लाभदायक: दहीसे मुखपर उज्ज्वलता आती है, त्वचापर झुरियां एवं मुखपर मलिनता इससे दूर होती है। इससे कील मुहांसे, अन्तरांगें चिंति व 'दाग'-धब्बे भी दूर होते हैं।
* दहीमें बेसन, नींबूका रस मिलाकर मुख व गलपर २० मिनटतक लगानेसे एवं ससाहमें दो बार ऐसा करनेसे मुख स्वस्थ
हो जाता है।
* १ चम्मच ताजा दिया, प्रतिदिन नहानेसे पूर्व मुखपर लगानेसे रुखेपनकी विकृति दूर हो जाती है।
* नारंगीके छिलकेका चूर्ण (पाउडर) व दही मिलाकर मुखपर लगानेसे त्वचा निखरती है। इसीप्रकार हल्दी, दही व गुलाब जल मिलाकर, दस मिनटतक मुखपर लगाने त्वचा दमक जाती है।

उत्तिष्ठ कौन्तेय

कश्मीरमें ५ सैनिक वीरगतिको प्राप्त हुए

राजौरी (जम्मू-कश्मीर) - यहां ५ मईको सुरक्षाबलों व आतंकवादियोंके मध्य भिडन्त हुई। इस भिडन्तमें हमारे ५ सैनिक वीरगतिको प्राप्त हुए। आतंकवादियोंने सैनिकोंपर ‘बम’ फेंके, जिससे २ सैनिकोंकी उसी स्थानपर मृत्यु हो गई। अन्य चोटिल ४ सैनिकोंचिकित्सालय ले जाया गया, जहां मात्र एक सैनिकके प्राण बचा जाया। अन्य तीन सैनिक वीरगतिको प्राप्त हुए।

यह सत्य है कि गत कुछ वर्षोंमें केन्द्र शासनके निर्देशनानुसार सुरक्षाबलोंके कार्यवाही करनेसे आतंकवादी गतिविधियोंमें न्यूनता आई है; परन्तु इसकी पूर्ण समाप्ति हेतु पाकिस्तानको ही मानचित्रसे हटाना होगा। (०६.०५.२०२३)

साभार: https://www.sanatanprabhat.org

***********

अंग्रेजी शिक्षकने भगवान राम एवं रामायणका किया अपमान

राजस्थानके अंग्रेजी भाषाके एक शिक्षक अमन वशिष्ठने भगवान रामका अपमान किया है। ऐसा दृश्यपट (वीडियो) प्रसारित करनेके पश्चात उसने क्षमा मांगकर बचनेका प्रयास किया है। अमन वशिष्ठने इस 'वीडियो'में बताया कि उसने रामायण पढ़
ली है; किन्तु एक व्यक्ति भी इसमें प्रसन्न नहीं दिखाई दिया। अमनने महाराज दशरथको सन्तानके अभावमें तनावग्रस्त बताया और ऋषि वशिष्ठद्वारा हवन करने और रानियोंको खानेके लिए खीर देनेपर परिहास किया। अंग्रेजी कक्षके छात्र अझानवश हंसते रहे। उसने यह परिहास करते हुए कहा कि बच्चोंके मुख दशरथजीसे नहीं मिलते।

कौशल्या माताको भी अपने पुत्र रामको राज्य नहीं मिलनेपर दुःखी बताया। सीता माताको भगवान रामके लिए वनमें मनोरंजनका भाग बताकर अत्यधिक अपमान किया।

अमन वशिष्ठ 'अंग्रेजी' भाषाका अध्यापक है और 'यूट्यूब' पर उनके लाखों उपभोक्ता हैं; किन्तु 'मैकॉले'की पढ़ाईके कारण, आधुनिकताके चक्रव्यूहमें फंसकर देशकी संस्कृति और धर्मका सर्दियों दोषपर तुला हुआ है। ऐसे अपराधियोंको दण्डना करना देशका दुर्भाग्य होगा। (०६.०५.२०२३)

**************

अवयस्कको गोद लेकर प्रेम देनेके स्थानपर किया शोषण: चिकित्सक वलीउल इस्लाम बन्दी, पत्नी संगीता दत्ताने किया पलायन

असम 'पुलिस'ने बाल शोषणके प्रकरणमें चिकित्सक वलीउल इस्लामको बंदी बनाया है। यह बंदी शुक्रवार, ५ मई २०२३ को हुई है। इसी प्रकरणमें चिकित्सककी पत्नी संगीता दत्ता पलायन कर चुकी हैं। संगीता पलायनमें सहयोगके आरोपमें चिकित्सककी एक सेविकाको भी अभिशंसके (हिरासतमें) लिया गया है।

मनोचिकित्सक वलीउल इस्लाम और उनकी पत्नीपर गुवाहाटीमें एक अवयस्क युवतीको नियमित प्रताडित करनेका
अभियोग प्रविष्ट था । आरोप है कि चिकित्सक दम्पति पीड़िताको भवनकी छतपर बांध दिया करते थे ।

प्रसार माध्यमोंके प्रतिवेदनके अनुसार, प्रकरण गुवाहाटी का है । यहां एक चिकित्सक दम्पति वलीउल इस्लाम और संगीता दत्ताविरा कथित रूपसे एक अवयस्क युवतीको गोद लिया गया था । आरोप है कि वह युवतीको प्रायः प्रताडित किया करते थे । इस प्रताडनामें युवतीके हाथ बांधकर उसे धूपमें छतपर खडाकर देना सम्मिलित था । चिकित्सकके एक पडोसीद्वारा इस प्रकरणका परिवाद 'पुलिस'में प्रविष्ट किया है । परिवादपर संज्ञान लेते हुए 'पुलिस'ने शुक्रवारका चुनौती चिकित्सक युगलके घरपर जांच की थी ।

जिस पन्थकी नींव ही अमानवीय मूल्योंपर पड़ी हो उस पन्थके अनुयायियोंसे मानवीय मूल्योंकी अपेक्षा नहीं की जा सकती है । इस अमानवीय कृत्यके लिए इस धर्मन्द युगलको कठोरतम दण्ड मिले, ऐसी प्रशासनके अपेक्षा है । (०६.०५.२०२३)

***************

‘पाकिस्तान आतंकी उद्योगका प्रवक्ता, पीड़ित और शोषक साथ नहीं बैठ सकते’ : बिलावल भुट्टोके सामने ही एस जयशंकरने पाकिस्तानको लताडा, चीनको भी चेताया

शंघाई सहयोग संगठनमें (SCO में) बैठकके मध्य भारतीय विदेश मंत्री एस जयशंकरकी पाकिस्तानके साथ कोई वार्ता नहीं हुई । प्रेस वार्ताके मध्य बिलावलने एक बार पुनः कश्मीरका राग अलापा । उन्होंने कहा, “कश्मीरमें जी-२० का आयोजन करना भारतके अभिमानको बलाता है । यह दिखाता है कि किस प्रकार अन्तरराष्ट्रीय नियमों और सुरक्षा परिषद प्रस्तावोंको एक ओर करके वह आगे बढ रहा है।”
विदेश मन्त्री ने कहा कि देशके सभी राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेशोंकी भांति हि जम्मू-कश्मीर भी है, जहां जी-२० की बैठकें हो रही हैं। इसमें कुछ भी असामान्य नहीं है। उन्होंने कहा कि पाकिस्तानके साथ जी-२० और श्रीनगर विषय है नहीं। पाकिस्तानके साथ केवल और केवल पाकिस्तानद्वारा राजसात (कब्जेवाला) कश्मीर (POK ही) विषय है।

बिलावलकी उपस्थितिमें ही विदेश मन्त्री जयशंकर ने पाकिस्तानके साथ जी-२० और श्रीनगर हवर्य निीं है। उन्होंने कहा कि जम्मू-कश्मीर भारतका अभिन्न था, है और रहेगा। पाकिस्तानकी विश्वसनीयता निरंतर घट रही है। वह आतंकके उद्योगका प्रवक्ता है। उन्होंने कहा कि आतंकवादके पीड़ित और पोषण करनेवाले एक साथ नहीं बैठ सकते।

इस मध्य चीनको भी सन्देश देते हुए विदेश मन्त्री एस जयशंकर ने कहा, "चीन और पाकिस्तानके साथ हमारे सम्बन्ध सामान्य नहीं हैं। सीमापर परिस्थिति सुधरनेतक ये सम्बन्ध सामान्य हो भी नहीं सकते।"

विश्वके प्रत्येक मंचपर पाकिस्तानको भारतसे मुंहकी खानी पड़ी है। उसके पश्चात भी वह अपनी कृत्योंसे पीछे नहीं हटता; अतः पाकिस्तानका नष्ट होना ही एकमात्र पर्याय है। (०६.०५.२०२३)

************

वैदिक उपासना पीठद्वारा कुछ आवश्यक सूचनाएं

९. वैदिक उपासना पीठद्वारा बच्चोंको सुसंस्कार रत करने हेतु एवं धर्म व साधना सम्बन्धित बातें सरल भाषमें बताने हेतु 'ऑनलाइन' बालसंस्कारवर्गका लाभ उठा सकते हैं। यह वर्ग प्रत्येक रविवार, त्रयोहारोंको एवं पाठशालाके अवकाशके दिन, प्रातः १० से १०:४५ तक होता है। इस वर्गमें ७ वर्षसे १५ वर्षकी
आयुतके बच्चे सहभागी हो सकते हैं। यदि आप अपने बच्चों को इसमें सम्मिलित करने हेतु इच्छुक हैं तो पत्तीकरण हेतु कृपया 9717492523, 9999670915 के 'व्हाट्सएप्प' पर सन्देश द्वारा सम्पर्क करें।

2. वैदिक उपासना पीठके माध्यमसे जो भी जिज्ञासु या साधक साधना करनेको इच्छुक हैं, वे हमारे 'whatsapp' गुट 'साधना'से जुड़ सकते हैं। इसमें आपको अपनी व्यक्ति साधनासे सम्बन्धी प्रश्न, अडचनें एवं साधनाके चरणोंके प्रवासके विषयमें मार्गदर्शन दिया जाएगा। इस हेतु मुझे 'साधना' गुटमें जोड़ें, इस सन्देशके साथ अपना नाम और आप कहा रहते हैं? (अपने जनपदका अर्थातं डिस्ट्रिक्टका नाम) यह लिखकर भेजें। इसके माध्यमसे आप घरसे रहकर ही अपनी साधना कर सकते हैं।

3. आदरणीय श्रोताओं एवं पाठकों, जैसा हक आपको ज्ञात ही है कि वैदिक उपासना पीठद्वारा श्री हरिहर गुरुकुलका शुभारम्भ किया जा चुका है; एवं इस निमित्त हम विद्यार्थियोंको कुछ विषय ऑनलाइन सिखा रहे हैं, यदि आप भी ऐसे विषय सीखने हेतु इच्छुक हैं तो अपना नाम व आपके जनपदके अर्थातं जिलेका नाम एवं कौन सा विषय सीखना चाहते हैं, यह लिखकर 'व्हाट्सएप्प' क्रमांक 9999 670915 पर भेजें।

वैदिक उपासना पीठके विद्या दानका सभी उप्रकम नि:शुल्क ही होता है; अत: ये विषय भी आप घर बैठे नि:शुल्क सीख सकते हैं।

1. रामचरितमानस – प्रातः , प्रत्येक दिवस, 9.00 से 9.30
2. संगीत – मंगलवार, गुरुवार एवं शनिवार, सन्ध्या 7.25 से 8.00
3. प्राकृतिक चिकित्सा – प्रत्येक दिवस रात्रि 8.45 से 9.00
4. अध्यात्मशास्त्र – शनिवार, मंगलवार एवं गुरुवार मध्याह्न (दोपहर) – 3.00 से 3.30
५. साधना – प्रातः ६.०० – ७.००, रात्रि ८.३० – ९.३०
६. वास्तुशास्त्र – रविवार, मध्याह (दोपहर) – ३.०० से ३.३०

हमने सोचा कि जो विद्यार्थियोंको सिखाया जा रहा है, उसका लाभ समाज भी क्यों न ले; आशा करते हैं हमारे इस प्रयाससे आप भी निश्चित ही लाभान्वित हो पाएंगे।

- विख्यात वैदिक उपासना पीठ